ADD 15 YEARS TO OUR LIFE
CAN WE? OF COURSE, WE CAN!

Add 15 Years |

हमारे रिलेशनशिप या हमारी मैरिज लाइफ में जिन्दगी के 15 साल ऐड करें!

USA/INDIA, Edition 2020 | HINDI (हिंदी)

लेखक:
(प्रो.) डॉ. एस. ओम गोयल,
एम.डी./डी.एम.
एम्स, एम.ए.एम.सी. और
दिल्ली विश्वविद्यालय से
एम.डी. मेडिसिन, यूएसए
डी.एम./फैलोशिप, यूएसए

विषय सूची

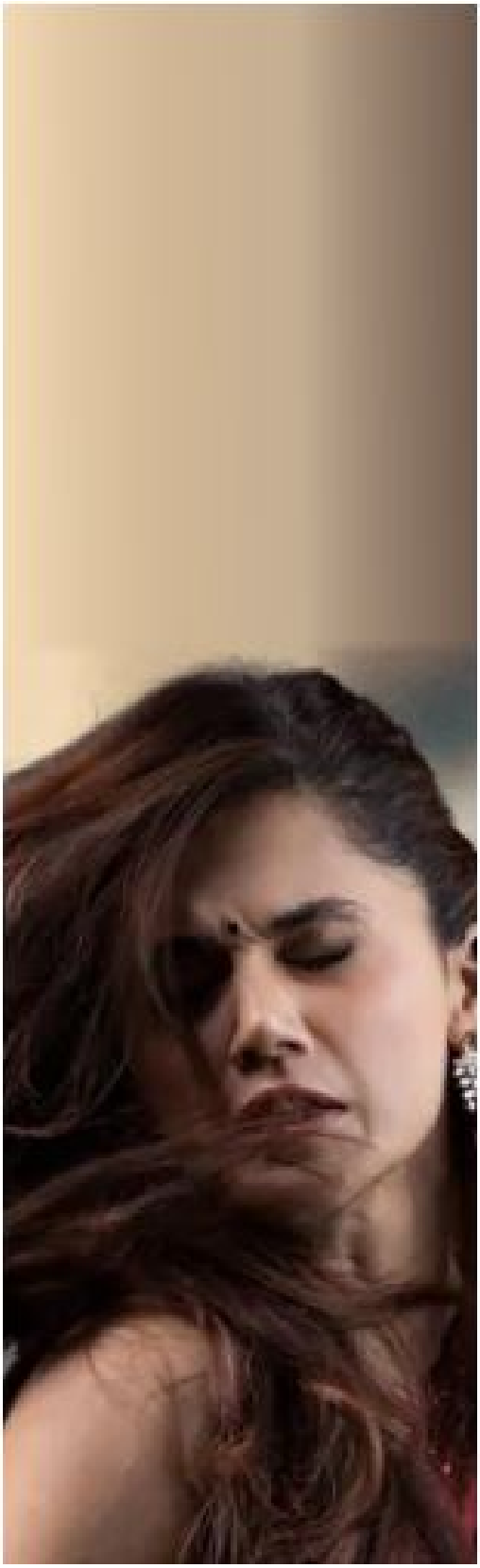

पाठ - 1

1. परिचय

पाठ - 2

2. डायलॉग 1

पाठ - 3

3. डायलॉग 2

पाठ - 4

4. डायलॉग 3

पाठ - 5

5. डायलॉग 4

पाठ - 6

6. डायलॉग 5

पाठ - 7

7. डायलॉग 6

पाठ - 8

8. डायलॉग 7

पाठ - 9

9. डायलॉग 8

पाठ - 10

10. डायलॉग 9

पाठ - 11

11. डायलॉग 10

पाठ - 12

12. डायलॉग 11

पाठ - 13

13. डायलॉग 12

पाठ - 14

14. डायलॉग 13

विषय सूची

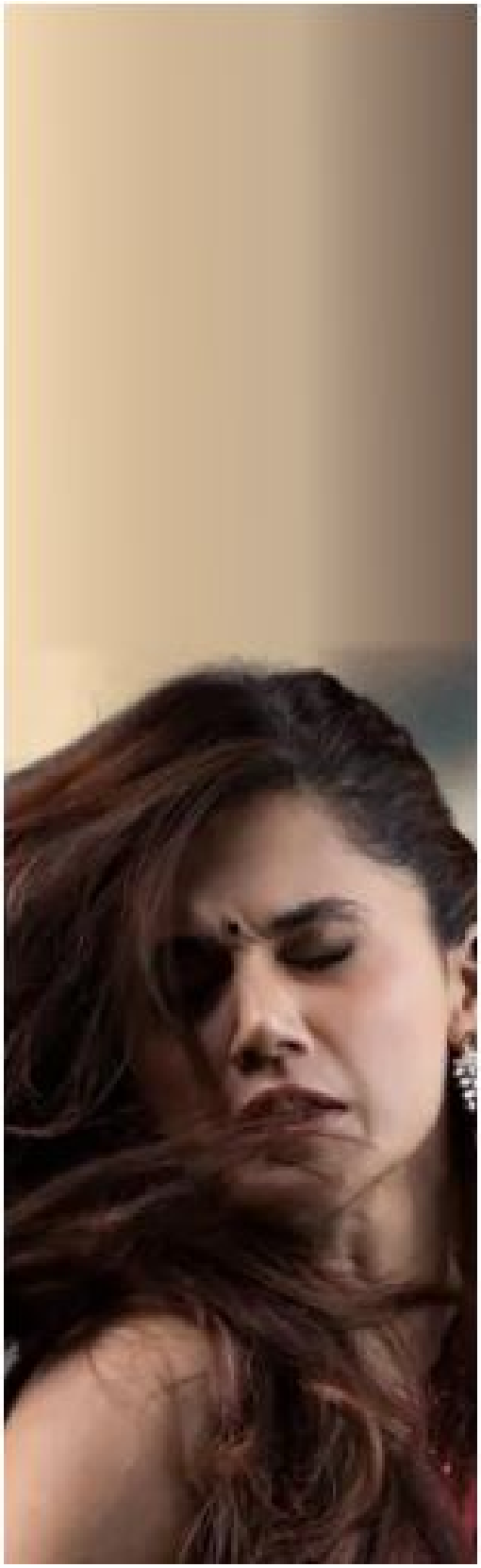

पाठ - 15

15. डायलॉग 14

पाठ - 16

16. डायलॉग 15

पाठ - 17

17. डायलॉग 16

पाठ - 18

18. डायलॉग 17

पाठ - 19

19. डायलॉग 18

पाठ - 20

20. डायलॉग 19

पाठ - 21

21. डायलॉग 20

पाठ - 22

22. डायलॉग 21

पाठ - 23

23. डायलॉग 22

पाठ - 24

24. डायलॉग 25

पाठ - 25

25. डायलॉग 26

पाठ - 26

26. डायलॉग 25

पाठ - 27

27. डायलॉग 26

पाठ - 1

परिचय

यह पुस्तक उन सभी महिलाओं के लिए एक स्तोत्र (Ode) है जिन्हें मैंने जाना है।

चाहे वह मेरी मां हो, मेरी पत्नी हो, मेरी बहन हो या मेरी बेटी।

मैं आप सभी को सलाम करता हूँ!

फिल्म देखने के बाद पुस्तक "थप्पड़" मेरे द्वारा महसूस किए गए प्रभाव को सामने लाती है और यह मूल रूप से फिल्म के कुछ संवादों की व्याख्या है।

(पाठ 1 चित्र -1)

जब मैं भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका में महिलाओं के व्यवहार को देखता हूं, तो मुझे भारत और यूएसए दोनों में दृष्टिकोण में इतना अंतर दिखाई देता है कि मुझे लगा कि मुझे इसके बारे में लिखना चाहिए। अमेरिका में महिलाओं के साथ बराबरी का व्यवहार किया जाता है। वे पुरुषों के साथ समान रूप से जिम्मेदारियों को भी निभातीं हैं। उन्हें भारत की तरह नीचा नहीं दिखाया जाता। इसलिए, मैंने महसूस किया कि एक बेटा, पति और पिता होने के नाते यह मेरा कर्तव्य है कि उन परिस्थितियों को सामने लाया जाए जिन पर हमें ध्यान देने की आवश्यकता है।

हमें अपने आदमियों को एक मजबूत आधार के साथ सही दिशा दिखाने की जरूरत है, जिससे कि वो हमारी लड़कियों को बोझ न समझे जैसा कि हमारी लड़कियां महसूस करती हैं।

पाठ - 2

डायलॉग 1 - क्या आप जानते हैं कि उस एक थप्पड़ से क्या हुआ था? वह सारे अनफेयर थप्पड़ मुझे साफ़ साफ़ दिखने लगे थे जो मुझे पड़े तो थे पर मैंने पहले महसूस नहीं किये थे।

डायलॉग 1 - क्या आप जानते हैं कि उस एक थप्पड़ से क्या हुआ था? वह सारे अनफेयर थप्पड़ मुझे साफ़ साफ़ दिखने लगे थे जो मुझे पड़े तो थे पर मैंने पहले महसूस नहीं किये थे।

एक युवा पत्नी से

(पाठ 2 चित्र -1)

एक महिला को जीवन के हर क्षेत्र में अधिकतर दिनों में अधिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है। चाहे वह घर पर हों, सड़क पर या कार्यस्थल पर। यह जानबूझकर हो सकता है या नहीं भी हो सकता है। लेकिन यह हमेशा उस भूत की तरह होता है जिसे आप देख नहीं सकते हैं, लेकिन इसकी उपस्थिति को महसूस कर सकते हैं। जब हमारे जीवन में एक बड़ी घटना घटती है जहां हम उन सभी छोटे-छोटे भेदभावों को महसूस करते हैं जो हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में घटित हुए होते हैं। चाहे वह ऑटो रिक्शा चालक हो जो अपनी टपोरी भाषा में "मैडम कहाँ चलोगी" कहता हो या काम पर वह सहकर्मी जो चालाकी से कहता हो कि "क्या आज आप कॉफ़ी में इंट्रेस्टेड हैं"।

पाठ - 3

डायलॉग 2 : यार तुम कितनी बेवकूफ हो, तुमसे शादी की है मैंने, तुम्हें सह रहा हूँ!, एहसान मानो मेरा!

डायलॉग 2 : यार तुम कितनी बेवकूफ हो, तुमसे शादी की है मैंने, तुम्हें सह रहा हूँ!, एहसान मानो मेरा!

एक युवा पत्नी से

ज्यादातर महिलाएं अपने वैवाहिक घरों में हर रोज पक्षपात का सामना करती हैं। भारतीय समाज ने महिलाओं को इतना सहनशील बना दिया है कि अब वे अपनी बात रखना या बोलना भूल चुकी हैं। चाहे वह उनके पति हों, या ससुर हों, या सास हों, या भाभी हों - वे अपने रोज के कार्यों में रोज ही कुछ ऐसे ताने सुनते हैं, कि हर दिन के साथ वे या तो हार मान लेती हैं या वे इसे छोड़ देती हैं।

शुक्र है कि हम नारीवाद का उदय होते हुए देख रहे हैं जो शायद उन खोई हुई आवाजों को वापस लाएगा।

(पाठ 3 चित्र -1)

पाठ - 4

डायलॉग 3 : यार प्लीज खाओ यार, मेरी वाइफ पकाने में तो एक्सपर्ट है, उसके टैलेंट की कुछ तो कदर करो।

डायलॉग 3 : यार प्लीज खाओ यार, मेरी वाइफ पकाने में तो एक्सपर्ट है, उसके टैलेंट की कुछ तो कदर करो।

एक युवा पत्नी से

यह पुरुषों की मानसिकता को दर्शाता है कि वे यह सुनिश्चित करते हैं कि वे अपने दोस्तों, परिवार और सहकर्मियों के सामने अपनी ट्रॉफी पत्नियों को दिखाएं। यह महिलाओं को अतिसंवेदनशील बनाता है जब प्रत्येक टॉम, डिक और हैरी जैसे लोगों जजमेंट्स देते हैं। उन्हें उनके लुक्स, उनकी शिक्षा, उनके खाना पकाने के कौशल और उनके दैनिक जीवन में उन्हें उनकी हर पसंद के लिए जज किया जाता है। जबकि पुरुष जंगल के राजा की तरह खुलेआम घूमते हैं।

(पाठ 4 चित्र -1)

पाठ - 5

डायलॉग 4 : शादी का मतलब ही होता है सेक्सुअल रिलेशनशिप जब सेक्स मे इंट्रेस्ट नहीं था तो शादी करके मेरी जिंदगी क्यों बर्बाद की ?

डायलॉग 4 : शादी का मतलब ही होता है, सेक्सुअल रिलेशनशिप जब सेक्स मे इंट्रेस्ट नहीं था तो शादी करके मेरी जिंदगी क्यों बर्बाद की?

एक युवा पत्नी से

भारतीय पुरुषों को लगता है कि शादी सेक्स करने का लाइसेंस है। भारतीय मानसिकता ने यौन जीवन को किसी के भी जीवन से बढ़कर बना दिया है जिसने भारत में बलात्कार, यौन उत्पीड़न जैसे मुद्दों को जन्म दिया है। भारतीय समाज और उसके लोगों को यह समझने की जरूरत है कि सेक्स महत्वपूर्ण है लेकिन महिलाओं के लिए सम्मान भी जरुरी है।

(पाठ 5 चित्र -1)

मेगास्टार अमिताभ बच्चन की एक फिल्म थी, जिसका नाम "पिंक" था, जहां वह बलात्कार और यौन हिंसा की पीड़िता के वकील हैं और अदालत में पीड़िता का बचाव करते हुए कहते हैं, "नहीं का मतलब नहीं"। जब कोई महिला कहती है कि उसे सेक्स करने में कोई दिलचस्पी नहीं है तो पुरुषों को

उसकी पसंद का सम्मान करना चाहिए वरना यह उसके शरीर पर उसके अधिकार का उल्लंघन करना है। शादी में सेक्स के लिए भी यही लागू होना चाहिए।

पाठ - 6

डायलॉग 5 : अरे तुम्हारा सारा खर्चा तो उठा रहा हूँ तुम एक दो जिम्मेदारियाँ तो उठा लो।

डायलॉग 5 : अरे तुम्हारा सारा खर्चा तो उठा रहा हूँ, तुम एक दो जिम्मेदारियाँ तो उठा लो।

एक युवा पत्नी से

भारतीय समाज ने परंपरागत रूप से महिलाओं को अपने घरों से जुड़े सभी कामों को संभालने की जिम्मेदारी दी है। बदलते समय के साथ महिलाओं ने खुद को शिक्षित करना शुरू किया और उन्हें अपने घरों की सीमाओं से बाहर निकलने का मौका मिला। उन्हें न सिर्फ अपने घरों का रोजमर्रा का काम संभालना पड़ता था बल्कि काम का दबाव भी झेलना पड़ता था।

जबकि पुरुषों के लिए यह आसान है (उनसे सिर्फ पैसे कमाने की उम्मीद की जाती है), महिलाओं से यह देखने की उम्मीद की जाती है - घर में राशन का स्टॉक है, घर का एसी ठीक से काम कर रहा है, खाना बनाना, बच्चों

(पाठ 6 चित्र -1)

की देखभाल करना और पति के कपड़े धोना और कपड़ों को प्रेस करना, वे वह सारा काम करती हैं जैसे कि एक ऑफिस को चलाने की जरूरत होती है।

क्या यह उचित है? क्या हमें अपने बेटों को नहीं सिखाना चाहिए जैसे कि हम अपनी बेटियों को घर की सभी जिम्मेदारियों को निभाना सिखाते हैं? क्या हमें अपनी बेटियों को बाइक चलाना सिखाते हुए अपने बेटों को गोल रोटी (चपाती) बनाना नहीं सिखाना चाहिए? क्या इससे हमारे बढ़ते लड़कों की मानसिकता में बदलाव आएगा? क्या वे महिलाओं का सम्मान करेंगे और अपनी जिम्मेदारियों को समान रूप से निभाएंगे? हम इस कल्चर को विदेशों में देखते हैं, उम्मीद है कि भारतीय संस्कृति में भी ऐसा ही होता है!

पाठ - 7

डायलॉग 6 : सुनो, एक कप चाय मिलेगी क्या ? या तुम्हारा फेमिनिज्म इसकी इजाजत नही देता है?

डायलॉग 6 : सुनो, एक कप चाय मिलेगी क्या? या तुम्हारा फेमिनिज्म इसकी इजाजत नही देता है?

एक युवा पत्नी से

(पाठ 7 चित्र -1)

अवचेतन रूप से हमने अपने लड़कों को महिलाओं को हल्के में लेना सिखाया है। और इसलिए वे ऐसा करते हैं! और ऐसा करके लड़के जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं के स्वाभिमान को कुचलते हैं। मुझे एक कप चाय पिलाओ? पत्नी को सिरदर्द है, वह कहती है- नहीं, मैं अभी नहीं बना सकती!

इस बात पर पति का ताना तैयार है- आपका नारीवाद आपको मुझे एक कप चाय लाने की अनुमति नहीं देता है?

अच्छा, अच्छा ठीक है तुम जा सकती हो!

पति के अहंकार के हाथों कुचला एक और महिला का स्वाभिमान! कृपया अपने लड़कों और लड़कियों को शादी को निभाते हुए एक-दूसरे का सम्मान करने की आवश्यकता सिखाएं! क्योंकि यही किसी भी स्वस्थ रिश्ते की

नींव रखेगा। या फिर एक महिला को स्वर्ण पदक विजेता या नारीवादी होने के बावजूद हमेशा उनके साथ असमान व्यवहार होने का विचार मन में होगा!

पाठ - 8

डायलॉग 7 : ओह कमऑन यार, अगर तुम इतनी capable होती न तो मुझे से कम से कम आधा तो कमा ही रही होती।

डायलॉग 7 : ओह कमऑन यार, अगर तुम इतनी capable होती न तो मुझ से कम से कम आधा तो कमा ही रही होती।

एक युवा पत्नी से

पुरुष महिलाओं को इतना आहत करते हैं कि वे अपने अपमान से कभी उबर ही नहीं पाती हैं। उन्हें लगता है कि वे कभी भी पुरुषों और उनकी क्षमताओं से मेल नहीं खा सकती हैं। हर बार जब कोई महिला अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है, तो कोई न कोई व्यक्ति उनकी कुछ हासिल करने की क्षमता पर सवाल उठाता है, जिस पर वह हाथ रखना चाहती है। चाहे वह काम शुरू करना हो या अपना खुद का व्यवसाय चलाना।

हमें पुरुषों को यह समझाना चाहिए कि यदि महिलाएं अपनी प्रतिभा के साथ आगे बढ़ना चाहती है तो पुरुषों को उनके साथ (चाहे भावनात्मक, शारीरिक या आर्थिक रूप से) खड़ा होना चाहिए और उन्हें सपोर्ट करना चाहिए।

(पाठ 8 चित्र -1)

पाठ - 9

डायलॉग 8 : अरे तुमसे क्या पूछना था? तुम्हें इन्वेस्टमेंट का I भी पता है क्या?

डायलॉग 8 : अरे तुमसे क्या पूछना था? तुम्हें इन्वेस्टमेंट का I भी पता है क्या?

एक युवा पत्नी से

महिलाओं के अस्तित्व और उनकी क्षमताओं पर सवाल उठाना ही वह आधार रहा है जिस पर भेदभाव उत्पन्न होता है।

आप उन्हें इस तरह से नीचा दिखाते हैं कि वे हर कदम पर खुद से सवाल करती हैं। अगर वे किसी XYZ कारण से किसी पुरुष को तलाक देना चाहती हैं, तो उनसे पूछा जाएगा - क्या आप अपने बच्चों को अकेले संभाल पाएंगी? क्या आप पर्याप्त कमाई कर पाएंगी? क्या आप समाज की कठिनाइयों का सामना कर पाएंगी?

और इस प्रकार आगे भी ऐसे ही और सवाल। और फिर सवाल से घिरी एक महिला और ऐसी कई अन्य महिलाएं इन कठिनाइयों से गुजर रही हैं, इन सभी आधार पर बस महिलायें

(पाठ 9 चित्र -1)

पाठ - 10

डायलॉग 9 : क्या तुमसे भीख माँगू सेक्स के लिए या अब तुम इसके लिए मुझ से पैसे चार्ज करोगी?

डायलॉग 9 : क्या तुमसे भीख माँगू सेक्स के लिए या अब तुम इसके लिए मुझसे पैसे चार्ज करोगी?

एक युवा पत्नी से

भारत में सेक्स एक एक ऐसा विषय है जिसके बारे में बात करना वर्जित है। हर कोई इसे करना चाहता है, लेकिन कोई इसके बारे में बात नहीं करना चाहता। चाहे वह यौन मुद्दों, गर्भ निरोधकों, प्रजनन समस्याओं, स्तंभन दोष, यौन संतुष्टि आदि से संबंधित हो। हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हम अपने बच्चों, लड़कों और लड़कियों दोनों को सेक्स और सेक्स से संबंधित मुद्दों के बारे में शिक्षित करें। अगर हम ऐसा करने में सफल रहे तो बलात्कार, यौन शोषण, यौन उत्पीड़न के आधे मामले कम हो जाएंगे।

(पाठ 10 चित्र -1)

पाठ - 11

डायलॉग 10 : हां, हां पता है तुम्हारा फेमिनिज्म, फेमिनिस्ट होती ना तो सिर्फ मेरी सिक्स फिगर सैलरी नहीं देखती।

डायलॉग 10 : हां, हां पता है तुम्हारा फेमिनिज्म, फेमिनिस्ट होती ना तो सिर्फ मेरी सिक्स फिगर सैलरी नहीं देखती।

एक युवा पत्नी से

यदि आप एक आदमी को उसके पैसे के लिए पसंद करते हैं, तो यह आपको कम नारीवादी बनाता है? **इस समाज में कोई भी स्पष्ट रूप से देख सकता है कि इससे उसे क्या प्राप्त हो रहा है। चा**हे वह आदमी का परिवार हो, उसका पैसा, उसकी हैसियत, उसकी कार आदि।

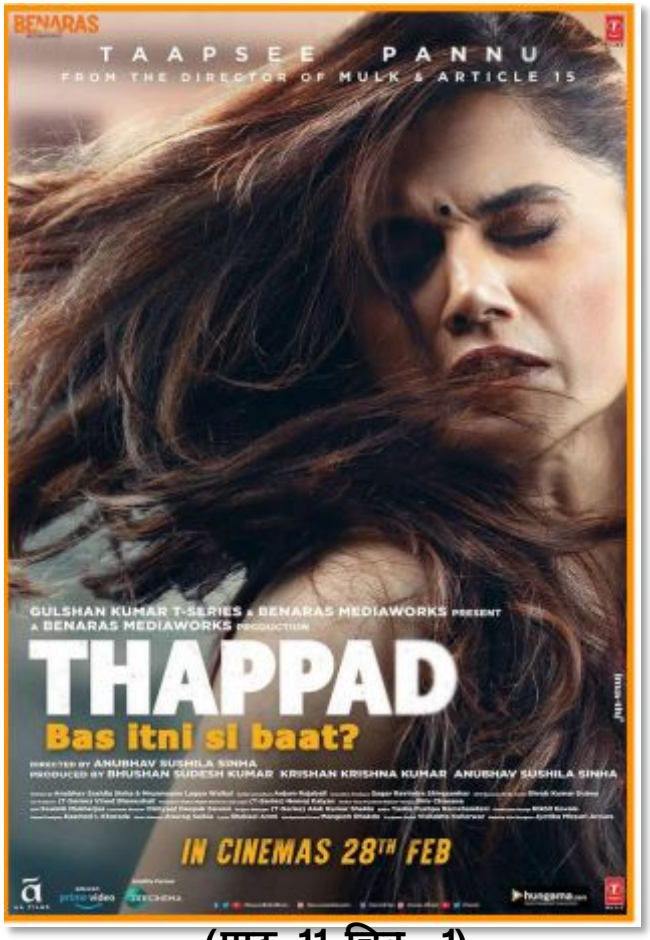

(पाठ 11 चित्र -1)

व्यक्तिगत रूप से, मुझे नहीं लगता कि इसमें कुछ भी गलत है। कोई भी एक अच्छी जीवन शैली चाहता है और बल्कि कोई भी लड़की सब कुछ बेहतर देखकर ही किसी अच्छे व्यक्ति से शादी करेगी। पुराने समय में भी, हमने उन राजाओं के बारे में सुना है जो उन रानियों से शादी करते थे जिनके पिता शक्तिशाली होने के साथ अपने शक्तिशाली साम्राज्य के राजा थे। अगर इस तरह के वैवाहिक संबंध पुरुषों के लिए अच्छे हैं, तो महिलाओं के लिए भी इसकी अनुमति क्यों नहीं दी जानी चाहिए!

पाठ - 12

डायलॉग 11 : अरे दो बच्चे तो ही पाल रही हो यार कौन सा अपनी कंपनी की बिज़नेस हेड हो।

डायलॉग 11 : अरे दो बच्चे तो ही पाल रही हो यार कौन सा अपनी कंपनी की बिज़नेस हेड हो।

एक युवा पत्नी से

एक महिला न केवल 9 महीने तक अपने गर्भ में एक बच्चे को पालती है, बल्कि वह अपने बच्चे के लिए हर आवश्यक चीज की व्यवस्था भी करती है। चाहे वह अपने शुरुआती वर्षों के दौरान बच्चे को स्तनपान कराना हो, या कॉलेज जाने वाले वयस्क जो "माँ के हाथ का खाना" चाहते हैं!

एक माँ को यह सब करना चाहिए!

चाहे वह उसका करियर हो जब वह अपने बच्चे को जन्म देती है और उसके बाद भी जब बच्चा बड़ा हो रहा होता है, तो वह पार्ट टाइम काम करती है ताकि वह बच्चे की देखभाल कर सके। क्या एक आदमी से कभी यह उम्मीद की जाती है कि वह बच्चा होने

(पाठ 12 चित्र -1)

पर इन सब कामों को करे? क्या पुरुष बच्चे पैदा करने के लिए अपना करियर छोड़ देते हैं या क्या वे पार्ट टाइम काम करते हैं जब उन्हें अपने बच्चों पर पूरी तरह से ध्यान देने की आवश्यकता होती है? इन सवालों के जवाब हम सभी जानते हैं! लेकिन ये मुद्दे आज भी कहीं गुम हैं क्योंकि समाज ने इन सब जिम्मेदारियों और बलिदान का बोझ महिलाओं के कंधों पर रख रखा है।

पाठ - 13

डायलॉग 12 : यार ये तुम्हारा पीरियड वाला बड़ा ड्रामा है कुछ कहो तो रोने लग जाती हो। अरे मजबूत बनो!

डायलॉग 12 : यार ये तुम्हारा पीरियड वाला बड़ा ड्रामा है कुछ कहो तो रोने लग जाती हो। अरे मजबूत बनो!

एक युवा पत्नी से

पीरियड्स को महिलाओं के लिए एक वर्जित विषय के रूप में भी देखा जाता है!

खैर लिस्ट इतनी बड़ी है कि जिसका कोई अंत नहीं है!

पीरियड्स में होने पर उनके साथ भेदभाव किया जाता है। इसे मत छुओ, उसे मत छुओ और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मंदिर मत जाओ! पढ़े-लिखे लोग निश्चित रूप से जानते हैं कि पीरियड्स एक प्राकृतिक घटना है! और फिर भी कुछ उच्च शिक्षित लोग भी इन भेदभावपूर्ण प्रथाओं का पालन करते हैं!

ऐसे में हम इतने पढ़े-लिखे लोगों से क्या उम्मीद कर सकते हैं?

(पाठ 13 चित्र -1)

अगर कोई लड़की किसी बात से परेशान है या आम तौर पर ठीक नहीं है या किसी कारण से अजीब या अलग व्यवहार कर रही है, तो पहली बात यह है कि पुरुष कहते हैं - कि उन्हें पीरियड्स की प्रॉब्लम है या उन्हें कोई हार्मोनल समस्या हो रही है! भले ही वह हो, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह हर महीने पीरियड्स के साथ आने वाले दर्द और कर्कशता में हर संभव कोशिश नहीं कर रही हैं! तो पुरुष - आपको मजबूत होने की जरूरत है और एक महिला को उसके पीरियड्स में सपोर्ट करने की जरूरत है! यह आपको किसी आदमी से कम नहीं बना देगा!

पाठ - 14

डायलॉग 13 : परिवार की जिम्मेदारियाँ या ऑफिस जॉब तुम्हें खुद सेंस होना चाहिए ना क्या जरूरी है?

डायलॉग 13 : परिवार की जिम्मेदारियाँ या ऑफिस जॉब तुम्हें खुद सेंस होना चाहिए ना क्या जरूरी है?

एक युवा पत्नी से

एक मंत्र जो महिलाओं को उनके जीवन की शुरुआत से सिखाया जाता है - सब कुछ संतुलित करो!

अपने पति और उसके परिवार को संतुलित करो!

अपनी आवश्यकताओं और अपने पति की ज़रूरतों को संतुलित करो!

अपनी नौकरी और अपने परिवार को संतुलित करो। अपने बच्चों और अपने पति को संतुलित करो!

इन सभी प्रकार की बहुत सारे संतुलन की उम्मीद एक महिला से रोज़ाना की जाती है।

(पाठ 14 चित्र -1)

यह एक महिला है जो अपने पैतृक घर को छोड़कर एक बिल्कुल नए वैवाहिक घर में प्रवेश करती है। वह सब कुछ छोड़ देती है और अपने नए घर को सब कुछ देती है! और फिर भी उससे अनंत उम्मीदें हैं! यह सिर्फ शादी पर खत्म नहीं होता है! बस यहीं से शुरुआत होती है!

पाठ - 15

डायलॉग 14 : बेटा मम्मी को पेरेंट्स मीटिंग में मत ले जाना, बेवकूफी वाले सवाल पूछेंगी, मैडम और डाटेंगी तुम्हें।

डायलॉग 14 : बेटा मम्मी को पेरेंट्स मीटिंग मे मत ले जाना, बेवकूफी वाले सवाल पूछेंगी, मैडम और डाटेंगी तुम्हें।

एक युवा पत्नी से

माँ माँ होती हैं!

और इसीलिए जब भी हम में से किसी को भी कोई समस्या या परेशानी या छोटी-छोटी हिचकी आती है, तो सबसे पहला शब्द हम कहते हैं "माँ"!

क्योंकि एक माँ अपनी क्षमता से सब कुछ करेगी और अपने बच्चे को किसी भी तरह से सहारा देने के लिए अपनी क्षमता से परे वह सब कुछ करेगी! स्कूल में, वे यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रकार के प्रश्न पूछना चाहेंगी कि उनका बच्चा अच्छा कर रहा है और किसी बुरी संगत में तो नहीं है।

यह एक छोटा सा काम लगता है, लेकिन यह बच्चे के सही दिशा में विकास को सुनिश्चित

(पाठ 15 चित्र -1)

करने के लिए एक लंबा रास्ता तय कर सकता है। मूर्खतापूर्ण प्रश्न हों या न हों, माता-पिता और विशेष रूप से एक माँ को अपने बच्चे के बारे में वह सब कुछ पूछने का अधिकार है जो वह जानना चाहती है। तभी वे अंदाजा लगा पाएंगी कि उनका बच्चा अपने स्कूल में कैसा कर रहा है। दिवंगत बॉलीवुड अभिनेत्री श्रीदेवी की एक फिल्म थी, जिसका नाम था ***"इंग्लिश विंग्लिश"*** जहां श्रीदेवी (मां) वास्तव में एक शिक्षित महिला नहीं है और कैसे वह अपने जीवन के बहुत समय बाद के चरण में अंग्रेजी भाषा सीखकर अपना स्वाभिमान अर्जित करती हैं। यह सब सिर्फ यह सुनिश्चित करने के लिए था जिससे कि उनके बच्चे और उनका पति उनके साथ सम्मान से पेश आएं!

पाठ - 16

डायलॉग 15 : अपने आप को देखो जरा दो बच्चों की माँ हों पर लगती पांच बच्चों की हो मुझे दोष मत देना अगर मेरा कोई दूसरा अफेयर हो जाये।

डायलॉग 15 : अपने आप को देखो जरा दो बच्चों की माँ हों पर लगती पांच बच्चों की हो मुझे दोष मत देना अगर मेरा कोई दूसरा अफेयर हो जाये।

एक युवा पत्नी से

महिलाओं से हर समय अच्छे दिखना और उत्तम होने की उम्मीद की जाती है! अपनी उम्र से कम दिखना!

क्या आपने कभी पुरुषों को कॉस्मेटिक सर्जरी करवाते हुए सुना है?

महिलाओं को सुंदर और सुंदर दिखने के लिए ताना मारना एक आम बात है (अवधारणाएं जो व्यक्तिपरक हैं), बस इसलिए कि पुरुष अपनी पत्नियों को अपनी ट्रॉफी दिखा सकें!? एक महिला को जन्म देना होता है, इस प्रक्रिया में उसका वजन बढ़ जाता है (जो स्वाभाविक है)। लेकिन प्रसव के बाद के कुछ महीनों में उसे अपना वजन कम करने की उम्मीद की जाती है, सिर्फ इसलिए कि उसका पति और समाज चाहता है कि वह अच्छी दिखे!

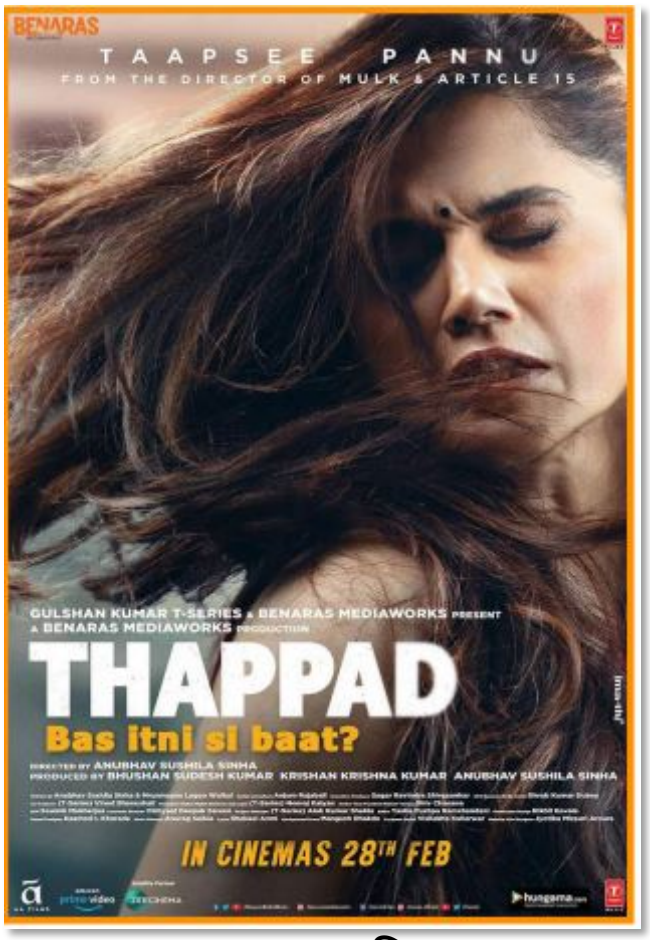

(पाठ 16 चित्र -1)

पाठ - 17

डायलॉग 16 : अरे, मेरा घर, मेरा घर बोलना छोड़ो यार, अब अपने ससुराल को अपनाओ अब ये है तुम्हारा घर।

डायलॉग 16 : अरे, मेरा घर, मेरा घर बोलना छोड़ो यार, अब अपने ससुराल को अपनाओ अब ये है, तुम्हारा घर।

एक युवा पत्नी से

एक महिला शादी के बाद अपना पैतृक घर छोड़ देती है। उसकी दुर्दशा की कल्पना करो। लगभग २५ (जब तक आपकी शादी नहीं हो जाती) साल तक उसने अपने पूरे जीवन में कुछ प्रथाओं, तरीकों, प्रणाली को देखा और सीखा है और शादी के बाद अचानक जो कुछ भी उसने सीखा है वह उसे भूल जाएं और वैवाहिक घर के सभी नए तरीकों के साथ खुद को बदलें!

क्या यह इतना आसान है? (एक मजाक)!

(पाठ 17 चित्र -1)

पाठ - 18

डायलॉग 17 : अब सैलरी मुझे से ज्यादा क्या हो गयी तो नौकर समझोगी मुझे।

डायलॉग 17 : अब सैलरी मुझे से ज्यादा क्या हो गयी तो नौकर समझोगी मुझे।

एक युवा पत्नी से

पुरुष का अहंकार सेकंडों में एक सुखी विवाह को नष्ट कर सकता है।

महिलाओं को पुरुषों के अधीन रहने के लिए कहा जाता है ताकि वे पुरुष के अहंकार को चोट न पहुंचाएं!

अपने पति से ज्यादा मत कमाओ।

पति से बहस न करो, पति की हर बात मानो!

क्यों?

सिर्फ अपने पति होने के तथाकथित अहंकार को संतुष्ट करने के लिए!

(पाठ 18 चित्र -1)

पाठ - 19

डायलॉग 18 : एक और प्रमोशन? लगता है तुम्हारा बॉस लकी नहीं है।

डायलॉग 18 : एक और प्रमोशन? लगता है तुम्हारा बॉस लकी नहीं है।

एक युवा पत्नी से

एक महिला से उसके चरित्र पर सवाल करना एक शॉट में महिला के कॉन्फिडेंस की हत्या करना है!

आपको बस इतना करने की जरूरत है - सवाल यह है कि वह अपने काम में श्रेष्ठ क्यों है? क्या आप कुछ और कर रहे हैं? काम के अलावा जो आपके बॉस को खुश रखता है? यह और कुछ नहीं बल्कि एक आभास है जो एक महिला के चरित्र के बारे में एक नकारात्मक अर्थ अर्थ को दर्शाता है।

पुरुषों को भी हर समय बढ़ावा दिया जाता है? लेकिन उससे पूछने की हिम्मत किसमें है? क्या उसका बॉस (जो कि एक महिला भी हो सकती है) – भी लकी है?

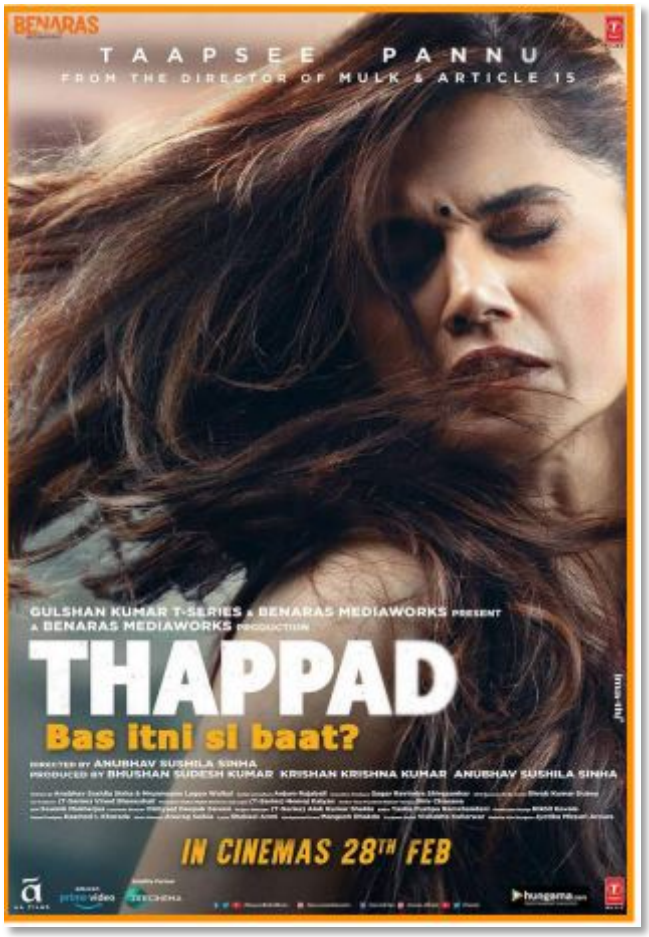

(पाठ 19 चित्र -1)

पाठ - 20

डायलॉग 19 : यार कितनी बेकार लग रही हो शॉर्ट्स में अब अपनी उम्र और साइज देखो यार!

डायलॉग 19 : यार कितनी बेकार लग रही हो शॉर्ट्स में अब अपनी उम्र और साइज देखो यार!

ओह अच्छा! ***आपको अपनी उम्र के हिसाब से तैयार होना चाहिए!*** हम इस कथन को कितनी ही बार सुनते हैं?

जब आप छोटे होते हैं - शॉर्ट्स मत पहनो, पुरुषों को गलत विचार आते हैं?

जब आप थोड़े बड़े होते हैं - शॉर्ट्स मत पहनो - तुम्हारे फिगर पे सूट नहीं होता?

जब आप और भी बड़े होते हैं - शॉर्ट्स मत पहनो - तुम्हारी उम्र पे ये सब सूट नहीं करता?

अच्छा - क्या किसी ने पुरुषों से शॉर्ट्स पहनना बंद करने के लिए कहा है क्योंकि वे एक विशेष उम्र के हैं?

(पाठ 20 चित्र -1)

कि महिलाएं उन्हें घूरेंगी? कि वे अब शादीशुदा हैं?
या कि वे एक विशेष उम्र में हैं?
फिर ये बातें सिर्फ महिलाओं पर ही क्यों लागू हों?
क्या यह लैंगिक भेदभाव नहीं है?

पाठ - 21

डायलॉग 20 : अगर प्रेशर नहीं ले सकती हो तो जॉब छोड़ दो ना वैसे भी अपने दोनों के लिए मैं पर्याप्त पैसे कमाता हूँ।

डायलॉग 20 : अगर प्रेशर नहीं ले सकती हो तो जॉब छोड़ दो ना वैसे भी अपने दोनों के लिए मैं पर्याप्त पैसे कमाता हूँ।

एक युवा पत्नी से

महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने जीवन को संतुलित करें, चाहे वह उनके लिए कितना भी कठिन क्यों न हो। काम और ऑफिस, बच्चों और पति आदि को संतुलित करें। यदि आप इन सब कामों को एक दिन के लिए भी नहीं कर पा रहे हैं - तो आपको सबसे पहली बात यह बताई जाएगी कि आपको अपनी नौकरी छोड़ देनी चाहिए? मैं अपने परिवार के लिए पर्याप्त कमाता हूँ! तो मैं यह कहना चाहूंगा कि ओह प्रिय पतियों - आप अपनी नौकरी क्यों नहीं छोड़ देते, और क्यों नहीं सब कुछ संतुलित कर लेते हैं और मैं आपसे ज्यादा पैसा कमा सकती हूँ? क्या यह तुम पर काम करेगा?

(पाठ 21 चित्र -1)

पाठ - 22

डायलॉग 21 : क्या सारे मजे अपने पुराने बॉयफ्रेंड के साथ कर लिए जो शादी के बाद सेक्स मे इंट्रेस्ट नहीं रहा तुम्हारा।

डायलॉग 21 : क्या सारे मजे अपने पुराने बॉयफ्रेंड के साथ कर लिए जो शादी के बाद सेक्स मे इंट्रेस्ट नहीं रहा तुम्हारा।

एक युवा पत्नी से

वर्जिनिटी एक नैतिक प्रमाण पत्र की तरह है जिसे प्रत्येक के पास होना चाहिए यदि वे महिलाएं हैं, खासकर भारतीय महिलाएं जो शादी करना चाहती हैं! क्या यह प्रश्न भारतीय पुरुषों पर लागू होता है?

यहां तक कि एक बेहद शिक्षित और पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी किसी महिला से पूछ सकता है कि क्या वह शादी से पहले से वर्जिन है। ऐसे व्यक्ति के पास यह कैसी शिक्षा है यह अत्यधिक संदिग्ध है! क्या केवल वर्जिनिटी ही एक महिला और उसके चरित्र को परिभाषित कर सकता है?

(पाठ 22 चित्र -1)

पाठ - 23

डायलॉग 22 : अरे मम्मी कम से कम अच्छी होममेकर तो थी तुम तो घर पर भी एवरेज हो और ऑफिस में भी एवरेज हो।

डायलॉग 22 : अरे मम्मी कम से कम अच्छी होममेकर तो थी तुम तो घर पर भी एवरेज हो और ऑफिस में भी एवरेज हो।

एक युवा पत्नी से

माताओं और पत्नियों के बीच तुलना एक भारतीय परिवार में एक औसत दिन में देखी जा सकती है! ओह मेरी माँ तुमसे बेहतर खाना बनाती है। ओह मेरी माँ की संगीत में तुमसे बेहतर चॉइस है| ओह मेरी माँ एक विशेष/ श्रेष्ठ गृहिणी हैं! अच्छा मेरा जवाब यह है कि - ओह तो फिर तुम्हारी माँ अपने बेटे की बेहतर परवरिश क्यों नहीं कर सकी!

(पाठ 23 चित्र -1)

पाठ - 24

डायलॉग 23 : थप्पड़ सिर्फ वह नहीं है जो चेहरे पर आकर लगता है थप्पड़ वो हर एक शब्द है जो सीधे आत्मसम्मान पर हमला करता है।

डायलॉग 23 : थप्पड़ सिर्फ वह नहीं है जो चेहरे पर आकर लगता है थप्पड़ वो हर एक शब्द है जो सीधे आत्मसम्मान पर हमला करता है।

एक युवा पत्नी से

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में जरूरी है कि ***पुरुष महिलाओं का सम्मान करें*** और हर संभव मदद भी करें। यह जरूरी नहीं है कि एक थप्पड़ केवल महसूस किया जाए और देखा जाए, कुछ निहित टिप्पणियों / विचारों / प्रश्नों को महिलाओं द्वारा हर रोज महसूस किया और देखा जा सकता है और ये जरूरी नहीं कि यह दूसरों द्वारा देखा या महसूस किया जा सके!

उदाहरण के लिए-एक पति अपनी पत्नी से पूछता है- "मुझे चाय पिलाओ", या "क्या वह भी तुम्हारे लिए नारीवादी है?" यह महिला के चेहरे पर एक अनदेखा तमाचा ही है जो उसके विश्वास और अखंडता पर सवाल उठाता है।

(पाठ 24 चित्र -1)

पाठ - 25

डायलॉग 24 : थप्पड़ सिर्फ वह नहीं जो हाथ उठाकर मार दिया। थप्पड़ हर एक वो सोच है जिसने जब चाहा नज़र से उतार दिया।

डायलॉग 24 : : थप्पड़ सिर्फ वह नहीं जो हाथ उठाकर मार दिया। थप्पड़ है हर एक वो सोच है जिसने जब चाहा नज़र से उतार दिया।

एक युवा पत्नी से

लोगों का महिलाओं के बारे में कुछ बातों को सोचने और मानने का यही तरीका है, जिसे बदलना चाहिए! तभी महिलाएं पूरे ***स्वाभिमान और सत्यनिष्ठा*** के साथ अपने पैरों पर खड़ी हो सकेंगी, जिसकी वे हकदार हैं! समाज को महिलाओं को उनके द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों या उनके बालों की स्टाइल के आधार पर भेदभाव करना बंद करने की आवश्यकता है! यह उनकी पसंद है और आपको इसका सम्मान करना चाहिए!

समाज के लोगों को अपनी विश्वास प्रणाली को बदलने की जरूरत है! तभी महिलाएं सिर ऊंचा करके अपना जीवन व्यतीत कर पाएंगी! कृपया बेटे-बेटियों को समान रूप से पालें!

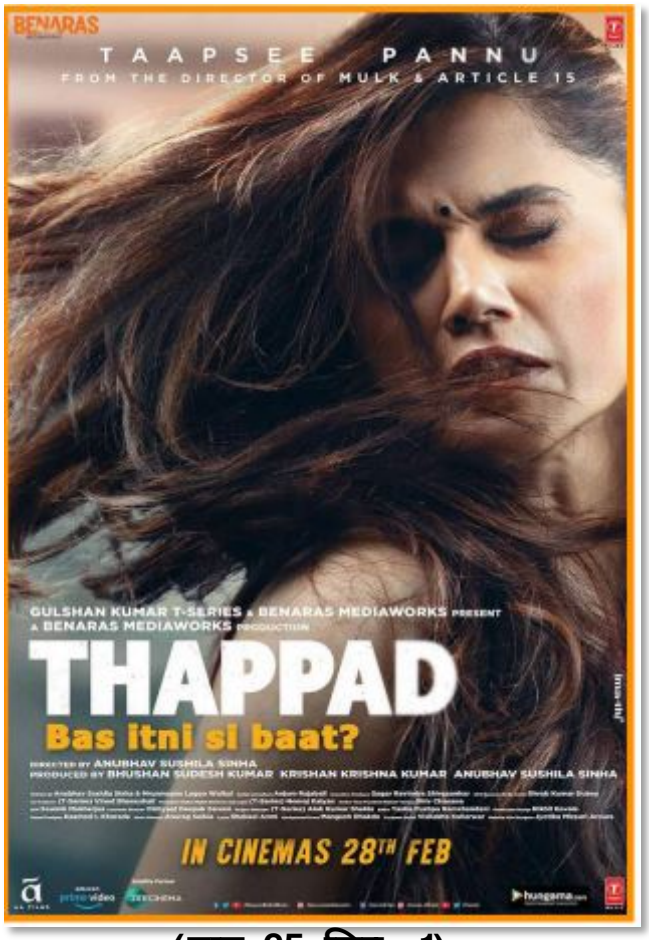

(पाठ 25 चित्र -1)

पाठ - 26

डायलॉग 25 : वह बस एक थप्पड़ नहीं, एक रिश्ते, एक भरोसे, बराबरी की नीलामी थी।

डायलॉग 25 : वह बस एक थप्पड़ नहीं, एक रिश्ते, एक भरोसे, बराबरी की नीलामी थी।

एक युवा पत्नी से

किसी भी रिश्ते में विश्वास जरूरी है! एक बार जब आप उस भरोसे को तोड़ देते हैं, तो उसे वापस पाने के लिए कुछ भी करने के बावजूद आपके रिश्ते में एक गांठ बनी रहती है! यह आपके रिश्ते पर सिर्फ एक तमाचा नहीं है, यह हर उस चीज पर एक तमाचा है जिसके लिए आप खड़े थे!

(पाठ 26 चित्र -1)

भारत और दुनिया भर में मी टू आंदोलन के चलते मुझे यह महसूस हुआ कि यह सत्ता या और बहुत से पॉवर में रहने वाले लोगों के मुंह पर एक तमाचा था। यह उन महिलाओं की कहानी थी जिन्होंने जीवन के सभी क्षेत्रों में लैंगिक भेदभाव और पक्षपात से लड़ाई लड़ी! मुझे लगता है कि महिलाओं के साथ अनुचित व्यवहार से नारीवाद का उदय होता है और उम्मीद है कि नारीवाद हमें समान बनने में मदद करेगा - चाहे वह घर पर हो, काम पर हो या अन्य किसी जगह!

पाठ - 27

डायलॉग 26 : मेरी तरफ से सामाजिक व्यवस्था और लैंगिक भेदभाव के नाम पर यह 21 थप्पड़ों की सलामी थी।

डायलॉग 26 : मेरी तरफ से सामाजिक व्यवस्था और लैंगिक भेदभाव के नाम पर यह 21 थप्पड़ों की सलामी थी।

(पाठ 27 चित्र -1)